शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भवभूति के नाटकों में स्वतन्त्र प्रयोग

डॉ. संगीता मेहता
विभागाध्यक्ष (संस्कृत)
महा.भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भवभूतेः शिखरिणी निरर्गल तरंगिणी।।
रूचिरा घन सन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।।
सुवत्त तिलक-3/33

अर्थात् भवभूति की शिखरिणी ऐसी तरंगिणी के समान है जो सभी प्रकार के बन्धनों को तोड़ती हुई स्वतंत्र गति से आगे बढ़ती है, जिसका प्रवाह अनवरूद्ध है, साथ ही वह मयूरी के समान सुन्दर भी है और गहन भावों से पूर्ण स्थलों में उसी प्रकार नृत्य करने लगती है,जैसे मेघों के सन्दर्भ में मयूरी। आचार्य क्षेमेन्द्र की यह उक्ति न केवल उनकी शिखरिणी अपितु उनकी कृतियों पर भी सार्थक है।

प्रस्तावना

रससिद्ध, ज्ञाननिधि, क्रान्तिधर्मी, महाकवि भवभूति साहित्य के क्षेत्र में नयी सरणियों के निर्माता थे। विषयवस्तु को नाट्योपयोगी बनाने तथा चरित्र को आदर्श बनाने के लिये उन्होंने मूलकथा में स्वतंत्र रूप से परिवर्तन किये। उनके नाटकों में अनेक ऐसे स्थल देखे जा सकते हैं, जहां उन्होंने लोक,समाज तथा प्रेक्षक को दृष्टिगत रखकर नाट्यशास्त्रीय परम्पराओं से निराबद्ध,स्वच्छन्द प्रयोग भी किये हैं। भवभूति प्रणीत तीन नाटक प्रख्यात हैं-महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित।

नाटक का अभिनय तीन-चार घण्टे की अल्पावधि में किया जाता है। नाट्यसिद्धान्तों में कहा गया है कि सामाजिकों की सुग्राह्यता की दृष्टि से नाटकों में काल, स्थान तथा कार्यरूप अन्वितित्रय होना चाहिये। भवभूति ने अपने नाटकों मे अन्वितित्रय को गौण कर दिया है। राम का सम्पूर्ण जीवन ही आदर्श था। अतः उनके चरित्र की उदात्तता की प्रस्तुति के लिये महाकवि भवभूति ने उसे महावीरचरित और उत्तर रामचरित नामक दो नाटकों में निबद्ध किया। कालान्विति की दृष्टि से महावीरचरित का काल चौदह वर्ष से भी अधिक है। उत्तर रामचरित का कथानक भी बारह वर्ष के दीर्घकाल में समाहित है। मालतीमाधव की घटना अपेक्षाकृत कम समय लेती है। स्थान की दृष्टि से महावीरचरित, अयोध्या के मिथिला तथा समुद्र पार लंका तक व्याप्त है।

उत्तररामचरित अयोध्या के राजप्रासाद, दण्डकारण्य तथा वाल्मीकि के आश्रम तक फैला है। कार्य की सत्वरता भी दर्शकों को संतुष्ट नहीं करती है। जैसे उत्तर रामचरित का तृतीय अंक रस परिपाक की दृष्टि से महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है, किन्तु उससे नाटकीय गति में सहायता नहीं मिलती है। इस प्रकार चरित्र को प्रधानता देते हुए भवभूति ने अन्वितित्रय को कम

महत्व दिया है, किन्तु अंकों में अविन्वतित्रय का ध्यान रखा है।

नाटकों में स्वतंत्र प्रयोग

नाटकों में भवभूति ने घटनाओं का वर्णन विस्तृत तथा अबाध गति से किया है, तो काव्य प्रकर्ष तथा रस परिपाक की दृष्टि से तो प्रशस्य है किन्तु नाटक की दृष्टि से नहीं। जैसे महावीरचरित में परशुराम के क्रोध का प्रसंग, मालतीमाधव में माधव की विरह -व्यथा, श्मशान -वर्णन, उत्तर रामचरित में लव और चन्द्रकेतु का विवाद वर्णन आदि।

दुरूहता और दीर्घ समास बहुलता से ऐसा प्रतीत होता है कि उनके नाटक पठन की दृष्टि से लिखे गये हैं। अभिनय की दृष्टि से नहीं।[1] महाकवि के पाण्डित्य ने सामाजिकों की ग्रहणशीलता की अवहेलना की है। महावीरचरित के अधिकांश पद्य गौड़ी रीति में लिखे गये हैं। लम्बे समास, कठोरवर्णो का प्रयोग वीर रस की उद्भावना तथा ओज की अभिवृद्धि में तो सहायक है किन्तु अभिनय की दृष्टि से अनुचित है। ऐसे पद्यों को कम या सरल किया जा सकता था।

वीर रस की प्रधानता को महावीरचरित की असफलता का कारण मानकर सम्भवतः भवभूति ने श्रृंगार - प्रधान मालतीमाधव की रचना की, किन्तु उसमें भी वे गौड़ी रीति का सर्वथा त्याग करने में समर्थ न हो सके। प्रथमांक में मकरन्द और माधव का वार्तालाप, तृतीयांक में लवंगिका का, सप्तमांक में मदयन्तिका तथा अष्टमांक में कलहंस के भाषण के प्रसंगो में वर्णन विस्तार तथा दीर्घ समासमयी भाषा से अभिनेता या अभिनेत्री को तो कष्ट होता ही है, साथ ही दर्शकों के धैर्य की भी परीक्षा होने लगती है।

भवभूति के नाटकों में सहोक्तियों का प्रयोग भी देखा जाता है जो कहीं तो चमत्कारजनक है,[2] किन्तु कहीं रंगमंच पर अभिनय करते समय रोचक एवं स्वाभाविक प्रतीत नहीं होती है। मालतीमाधव में अघोरघण्ट और माधव[3] की तथा उत्तररामचरित में लव तथा चन्द्रकेतु[4] के वार्तालाप में इस प्रकार की सहोक्तियां हैं।

अगाध पाण्डित्य के होते हुए भी भवभूति ने पद्य ही नहीं अपितु अर्द्धपद्यों[5], पद्यांशों[6] पदसमूहों, वाक्यों और गद्य-खण्डों की पुनरावृति की है।[7] जैसे महावीरचरित का एक पद्य मालतीमाधव तथा उत्तररामचरित में उद्धृत है।[8] महावीरचरित[9] तथा मालतीमाधव[10] के नौ-नौ पद्य उत्तर रामचरित में अवतरित हैं। एक ही बात की पुनरावृति से इन प्रसंगों में एकार्थता नामक दोष भी माना गया है[11], किन्तु इससे प्रभावित न होते हुए महाकवि ने कुछ पद्यों को उसी रूप में या अल्पपरिवर्तन[12] के साथ अपने नाटकों में स्थान दिया है। इस पुनरावृत्ति से कवि की कल्पना का दारिद्रय नहीं, वरन् उन भाव या विचारों के प्रति उनकी विशेष रूचि परिलक्षित होती है। संवादात्मक श्लोक कवि की विशेषता है।[13]

संस्कृत और प्राकृत दोनों ही भाषाओं के स्वनिर्मित शब्दों के अनेक प्रयोग महाकवि ने किये हैं। इनके नाटकों में एक और अप्रचलित शब्दों[14] का प्रयोग है तो दूसरी और अपाणिनीय प्रयोग[15] भी परिलक्षित होता है।

प्रकृति वर्णन में भवभूति ने परम्परागत स्वरूप को त्यागकर नवीन प्रणाली को जन्म दिया। उन्हें न केवल मानव प्रकृति से अपितु जड़ प्रकृति से भी विशेष अनुराग था।

उनकी पदयोजना स्वतः ही प्रकृति के वर्ण्य-विषय की ध्वनि उपस्थित कर देती है, चाहे वह कलकलनिनादिनी निर्झरिणियों की ध्वनि हो या श्मशान के पेड़ पर लटके शवों के सिरों की माला के सरन्ध्र भागों में गूंजते और श्मशान की

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पताका को हिलाकर उसकी घंटियों को बार-बार बजाने वाली वायु की भयंकरता हो।

नाटक की रचना करते समय नाटककार को औचित्य का विशेष ध्यान रखना चाहिये।[16] नाटक के पात्रों मे कुलशील, विद्वता, आयु, परिस्थिति आदि का ध्यान रखते हुए उक्तियों का प्रयोग करना चाहिये।[17] भवभूति ने पात्रों के नामकरण,आशीर्वाद, सम्बोधन आदि स्थलों पर सर्वत्र औचित्य का निर्वाह किया है। तथापि कतिपथ स्थल हैं, जहां पर अनौचित्य भी दृष्टिगत होता है,जैसे रंगमंच पर आलिंगन व शयन निषिद्ध है, फिर भी भवभूति ने मालतीमाधव के षष्ठ अंक में मालती तथा माधव के आलिंगन[18] मालती वेशधारी मकरन्द और माधव का आलिंगन[19], सप्तम अंक में मालती (मकरन्द) का शयन[20] अभिनीत कराया है जो अनुचित है।

नाटक में नायक के चरित्र की रक्षा नाटककार द्वारा की जानी चाहिये। उत्तर रामचरित के पंचमांक में अप्रधान पात्र लव द्वारा नायक राम की आलोचना[21] की है, जो अनुचित है, किन्तु यदि सन्दर्भो को देखा जाय तो कदाचित वह प्रसंग भी अनुचित प्रतीत नहीं होता है।

उत्तर रामचरित के अलसललित---- तथा किमपि किमपि मन्दं मन्दं ---पद्यद्वय[22] अनौचित्य की श्रेणी में आते हैं। नाट्य लोक की अनुकृति होता है, अतः इसमें लोकमर्यादा की रक्षा होनी चाहिये, किन्तु सम्भोग श्रृंगार से परिपूर्ण इन दो श्लोकों को राम ने लक्ष्मण के सम्मुख सीता से कहकर सामाजिक मर्यादा का अतिक्रमण ही कर डाला। रघुकुल वंशज, उदात्त गम्भीर व्यक्तित्व राम का यह कथन सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है।[23] सम्भवतः लक्ष्मण राम के अन्तरंग के साक्षी थे, इसीलिये भवभूति ने इसे अनुचित नहीं माना अथवा यह भी सम्भव है कि महाकवि की उत्तर रामचरित की हस्तलिखित मूलप्रति में राम के कथन में जनान्तिक का प्रयोग रहा हो।

उत्तररामचरित के चतुर्थ अंक में समंस या अमंस का,तथा मधुपर्क का वर्णन अप्रासंगिक, अनावश्यक और अनुचित है। वसिष्ठ और वाल्मीकि को गो भक्षक और गो घातक बनाने की चेष्टा को सर्वथा निन्द्य कहा गया है।[24]

पात्र योजना में भी भवभूति ने नाट्यशास्त्रीय परम्परा से हटकर प्रयोग किये हैं। एक ओर तो उन्होंने हास्य के प्रमुख स्रोत विदूषक को रंगमंच से ही निष्कासित कर दिया तो दूसरी ओर प्राकृतिक तत्वों पृथ्वी, वनदेवता (वासन्ती), गंगा, तमसा, मुरला, गोदावरी आदि नदियों की पात्र रूप में योजना की है। छाया सीता की कल्पना भी भवभूति की मौलिकता है।

गम्भीर प्रकृति के कवि भवभूति ने विदूषक जैसे पात्र को अपने नाटक में स्थान देना उचित नहीं समझा। हास्य की पूर्ति सुन्दर व्यंग्य के माध्यम से की है। कतिपय स्थलों पर हास्यविहीन व्यंग्य अपशब्द के समान प्रतीत होता है, जैसे परशुराम और शतानन्द का वाक्कलह।

नाटक के नायक राम का चरित्र कर्तव्यनिष्ठा और आदर्श से सम्पन्न होते हुए भी मानव सुलभ दुर्बलताओं से समन्वित है। यह भवभूति की स्वतंत्रता ही है कि राम जैसे नायक की अधीरता एवं मूर्छा का वर्णन किया है।

भवभूति के वर्णन स्वानुभूतिजन्य, स्वाभाविक तथा लोक के निकट हैं। उनके नायक राम भी लौकिक पात्र हैं। वे उसी करुणा के केन्द्र हैं, जिसके आधार पर भवभूति ने एकोरसः करुण एवं[25] की प्रतिष्ठा की और पत्थर को भी रुला दिया[26] तो करुणा से आप्लावित राम अधीर हुए बिना कैसे रहते ?

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

करुण को रसाधिराज सिद्ध कर अन्य रसों को करुण में ही परिगणित करने में भवभूति अद्‌वितीय हैं।[27]

सुखान्त की दृष्टि से राम और सीता का पुनर्मिलन भवभूति की स्वतंत्र उद्भावना है। स्वतंत्र प्रयोगों के कारण भवभूति को अपने जीवनकाल में तीव्र आक्षेपों का शिकार होना पड़ा। इसका संकेत उन्होंने मालतीमाधव[28] के प्रथमांक में किया है, किन्तु फिर भी वे अपनी कृतियों के प्रति आस्थावान और दृढ़िविश्वासी बने रहे तथा नाटकों में परिष्कार भी करते रहे।

निष्कर्ष

आलोचकों की उपेक्षा करते हुए उन्होंने उत्तर रामचरित में कहा है कि स्त्रियों के चारित्र्य तथा वाणी के निर्दोष होने के विषय में लोक दोषदर्शी होता है।[29] अभिनय की दृष्टि से पूर्णतः सफल न होने पर भी उनके जीवन काल में ही उनकी कृतियों का सफल मंचन हो गया था।

स्वच्छन्द और उन्मुक्त होकर भवभूति ने प्रतिभा पाण्डित्य और भावातिरेक के मणिकांचन संयोग से संस्कृत वाङ्मय को अपनी अपूर्व कृतियां दी हैं और इसीलिये परवर्ती काल में भवभूति के समीक्षकों ने कहा है-

कवयः कालिदासाद्‌या भवभूतिः महाकविः।

सन्दर्भ स्थल

1. विंटरनित्जः भवभूति, पृष्ठ 236

2. महावीरचरित प्रथमांक-सीता उर्मिला द्‌वारा पृथक् उद्देश्य को लेकर एक ही बात का कथन 'पणमामो'।। कुशध्वज के पास पहुचंकर राम -लक्ष्मण को गुरो,अभिवादों कहकर प्रणाम करना।।। मालतीमाधव-5/32, उत्तर रामचरित, 3/48

3. मालतीमाधव 5/34

4. उत्तररामचरित 5/16,18,19

5. महावीरचरित 2/45 क ख तथा 5/42 ग घ

6. फलभरपरिणामष्यामजम्बूनिकुञ्जः महावीरचरित 5/40,9/24 तथा उत्तर रामचरित 2/20

7. पुनरूक्तियों की सूची - महावीरचरितम् (टोमलमल) प्रस्तावना पृष्ठ 40-43।। महाकवि भवभूति गंगासागर राय

8 महावीरचरित 5/41 मालतीमाधव .9/6, उत्तर रामचरित .2।11

9. महावीरचरित 1/18, 42,57,2/41,3/29,4/33,51,5/13,40

10. मालतीमाधव 1/24,4/7, 8/3, 9/6, 12,14,20,34,10/2

11. भवभूति के नाटक -डा.ब्रजवल्लभ शर्मा, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल 1973, पृष्ठ 255

12. मालतीमाधव 1/5 के स्थान पर 3, 48(जैसे 'भद्रं भद्रं वितर भगवन् भूयसे मंगलाय' के स्थान पर तव वितरतु भगवान भूयसे मंगलाय)

13. सोऽयं शैलः (1/33, 3/48, 7/9, 5/16,5/18,5/19)

14. आरकूट 5/14, कन्दल 3/19 प्रतिसूर्यक 2/16, अम्बूकृतानि 2/21,मौकुलि,प्रचलाकिन, रोहिण, कुम्भीनस 2/29

15. दूषणरवत्रिमूर्धनि 2/15 में द्‌वित्रिभ्या (5.4.115) से समासान्त करने पर ष (अ) प्रत्यय करने पर त्रिमूर्धा रूप बनेगा। समासान्त विधि को अनित्य मानने पर यह रूप बन सकता है।

16. वाच्यानां वाचकानां यदौचित्येन योजनम्। रसादिविषयेणैतद् मुख्यं कं महाकवेः।औचित्यविचारचर्चा- क्षेमेन्द्र 3/33

17. उचितं प्राहुरराचार्या सदृशम किल यस्य तत्। उचितस्य तु यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते ।। औचित्यविचार चर्चा.का.7

18. मालतीमाधव पृष्ठ 131

19. मालतीमाधव पृष्ठ 138

20. मालतीमाधव पृष्ठ 142

21. उत्तर रामचरित 5/35

22. उत्तर रामचरित 1/24,27

23. उत्तर रामचरित के पद्‌यद्‌वय में औचित्य विमर्ष,कुसुम भूरिया-नाट्‌यम्,पृ.83

24. उत्तर रामचरित - चतुर्थ अंक पृष्ठ 266-268

E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2016

25. एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्।
भिन्नः पृथक् पृथिगिवाश्रयते विवर्तान्।
आवर्त बुदबुदतरंगमयान् विकारान्।
अम्भो यथा सलिलमेव तु तत्समग्रम्। उत्तर रामचरित 3/47
26. अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयं - उत्तर रामचरित 1/28
27. उत्तर रामचरित -3/47
28. ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां
जानन्ति ते किम तान्प्रति नैषयत्नः।
उत्पत्स्यते मम तु कोऽपि समानधर्मा
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी। मालतीमाधव 1/6
29 यथा स्त्रीणाम तथा वाचा साधुत्वे दुर्जनो जनः।
उत्तर रामचरित 1/5